(नियमसार प्रवचन, पृष्ठ २४ का शेष...)

ज्ञानी व्यवहार से भी छह द्रव्यों को भिन्न-भिन्न जानता है। मैं ज्ञायक हूँ, समस्त द्रव्यों को जानने वाला हूँ। मेरा आनन्द मुझमें है, वह पर से प्राप्त नहीं होता। ज्ञान-दर्शन-सुख-वीर्य मेरे स्वयं के कारण हैं ह्न ऐसा बुद्धिमान पुरुष जानते हैं। वे व्यवहार मार्ग को जानते तो हैं; किन्तु परमार्थ से मोक्षमार्ग को ही आदरते हैं। व्यवहार में ठहरने से पुण्य होता है, किन्तु आत्मा का कल्याण नहीं होता, इसमें आत्मा की शांति नहीं है। •

(छहढाला प्रवचन, पृष्ठ २१ का शेष...)

अतीन्द्रियज्ञान व अतीन्द्रियसुख का अस्तित्व दिखाई ही नहीं देता। अहो ! अतीन्द्रियज्ञान व अतीन्द्रियसुख का कोई अपार माहात्म्य है। श्रीकुन्दकुन्दस्वामी ने भी प्रवचनसार में उसकी बड़ी भारी महिमा समझायी है। जो उसका स्वरूप समझे उसे अपने में भी अतीन्द्रिय ज्ञान व अतीन्द्रिय आनन्द का अंश अनुभव में आ जाता है। इन्द्रियज्ञान से ऐसा स्वरूप समझ में नहीं आ सकता। जो अकेले इन्द्रियज्ञान में या राग में ही मग्न है, वह तो रागादि को साधन बनाकर मोक्ष को साधना चाहता है; परन्तु मोक्ष का साधन ऐसा नहीं है, मोक्ष का सच्चा उपाय वह नहीं जानता।

इसप्रकार तत्त्व की भूल सो मिथ्यात्व है और मिथ्यात्वसहित जो कुछ भी जानपना या शास्त्रपठन आदि हो वह सब अज्ञान है, मिथ्याज्ञान है और ऐसे मिथ्याश्रद्धा-मिथ्याज्ञान सहित होनेवाला शुभाशुभ आचरण मिथ्याचारित्र है। ये मिथ्याश्रद्धा-मिथ्याज्ञान-मिथ्याचारित्र जीव को महान दुःख देनेवाले हैं। हे जीव ! तूने सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र से उनका अभाव करके अपने सच्चे स्वभाव की श्रद्धा कभी नहीं की, उसका ज्ञान भी नहीं किया और उसमें स्थिरता भी नहीं की। मिथ्यात्वादि विपरीत भावों का सेवन करके तूने दुःख ही दुःख भोगा है; अत: अब उससे छुटकारा पाने के लिये वीतरागी सन्तों का यह उपदेश ग्रहण कर !

इसप्रकार मिथ्याश्रद्धा और मिथ्याज्ञान के कारण इस जीव की तत्त्वों के स्वरूप संबंधी किसप्रकार की भूल होती है, यह यहाँ दिखाया गया; अत: अपनी इस भूल को समझकर इसको टालना चाहिए और सम्यक्त्वादि प्रगट करके मोक्षमार्ग में लगना चाहिए। अब आगे के छन्द में मिथ्याचारित्र का स्वरूप भी संक्षेप में बताकर उसे छोड़ने का उपदेश देते हैं। •

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 28 315 अंक : 3

राचि रह्यो पर माँहि....

राचि रह्यो पर मांहि तू अपनो रूप न जानै रे।।टेक।।
अविचल चिनमूरत विनमूरत सुखी होत तस ठानै रे।
राचि रह्यो पर मांहि ...।।1।।
तन-धन, भ्रात-तात, सुत-जननी, तू इनको निज जानै रे।
ये पर इनहिं, वियोग-योग में यौं ही सुख-दुख मानै रे।।
राचि रह्यो पर मांहि...।।2।।
चाह न पाये, पाये तृष्णा सेवत ज्ञान जघानै रे।
विपतिखेत विधिबंधहेत पै जान विषय रस खानै रे।।
राचि रह्यो पर मांहि...।।3।।
नर भव जिनश्रुतश्रवण पाय अब कर निज सुहित सयानै रे।
दौलत आतम ज्ञान सुधारस पीवो सुगुरु बखानै रे।।
राचि रह्यो पर मांहि...।।4।।

– कविवर पण्डित दौलतरामजी

छहढाला प्रवचन

निर्जरा और मोक्ष तत्त्व संबंधी भूल

रोकी न चाह निजशक्ति खोय, शिवरूप निराकुलता न जोय।
याही प्रतीति जुत कछुक ज्ञान, सो दुःखदायक अज्ञान जान॥७॥

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

अज्ञानी द्वारा देह और राग में एकत्वबुद्धिपूर्वक किया गया तप वास्तविक तप नहीं है और उससे मोक्ष के कारणरूप निर्जरा नहीं होती; मिथ्यात्वसहित होने से वह बालतप है अर्थात् मिथ्यातप है, अज्ञानतप है; उसमें अकाम-निर्जरा तो है; परन्तु वह मोक्ष का कारण नहीं है। मोक्ष का कारण तो सम्यग्दर्शनपूर्वक किया गया सम्यक् तप है, उससे सकाम निर्जरा होती है। निर्जरा के ऐसे स्वरूप को अज्ञानी नहीं जानता और अन्यथा मानकर संसार में भ्रमण करता है। जीव वीतराग-विज्ञान के द्वारा ही ऐसे संसारभ्रमण से छूट सकता है।

भाषा और इच्छा जीव का धर्म नहीं है; जीव इन दोनों से भिन्न है। दूसरे जीव समझें या विरोध करें इससे इस जीव को कोई लाभ या हानि नहीं होती। दूसरों को समझाने का शुभ विकल्प अपने को बन्ध का कारण है ह्न चाहे वह बंधन तीर्थंकर नामकर्म प्रकृति का ही क्यों न हो ? अंतत: वह है तो बंधन ही। बंधन धर्म नहीं होता और मोक्ष का कारण भी नहीं होता। यद्यपि तीर्थंकर प्रकृति धर्मी के ही बंधती है; परन्तु वह धर्म से नहीं बंधती; अपितु धर्म के साथ में जो राग-अपराध शेष रहा है, उससे बँधती है। धर्मी को उस राग का, उस प्रकृति का या उसके फल का आदर नहीं है, उससे वह अपने को लाभ नहीं मानता, उससे भिन्न अपना अनुभव करता है। सम्यग्दर्शनपूर्वक हुई वीतरागता का नाम धर्म है। आत्महित के उपायरूप वीतराग-विज्ञान को अज्ञानी नहीं पहचानते, उसको तो वे कष्टदायक मानते हैं और रागादिको सुखदायक मानते हैं ह्न ऐसे विपरीत मान्यतापूर्वक किये गये व्रत-तपादि भी विपरीत ही होते हैं ह्न यह बात आगे

के छन्द में दिखायेंगे। इसप्रकार तत्त्व को समझने में जीव की अनादिकालीन भूल को छुड़वाने के लिये श्रीगुरु का उपदेश है।

भाई ! तुम अपने आत्मा के ज्ञान बिना बहुत दुःखी हुए। आत्मज्ञान बिना परसन्मुख का झुकाव रुकता नहीं है, इच्छा टूटती नहीं है और दुःख मिटता नहीं है। जिन्होंने आत्मा को देह से भिन्न जान लिया है, वे देह में रोगादि होने पर भी आत्मस्वरूप की सावधानी से नहीं चूकते। लाखों प्रतिकूलताएँ हो तो भी मुझे क्या? वे मुझमें तो नहीं है। परद्रव्य आए या छिन्न-भिन्न होवे, इससे मुझे क्या ? मैं तो ज्ञान हूँ; ज्ञान में न इच्छा है, न संयोग। जिसको ऐसे निजरूप का भान नहीं है, वह यदि भगवान का नाम लेता हुआ मरे तो भी वह देह और राग में ही मूर्छित है, उसे उससे भिन्न निजस्वरूप की जागृति नहीं है। उसे मोक्ष या मोक्षमार्ग का ज्ञान नहीं है।

प्रत्येक आत्मा स्वतंत्र, देह से भिन्न, चेतनामय है; उसको न जानकर कोई ऐसा माने कि देह और आत्मा एक हैं, कोई ऐसा माने कि राग और आत्मा एक है और कोई ऐसा माने कि मोक्ष में एक आत्मा दूसरी आत्मा से मिल जाती है तो वे सब स्व-पर की एकत्वबुद्धि में समान ही हैं। जैसे यहाँ प्रत्येक आत्मा अपने-अपने भाव में रहकर अपने-अपने सुख-दुःख का वेदन करता है, वैसे ही मोक्षदशा में भी प्रत्येक मुक्त जीव अपने-अपने स्वरूप में रहकर अपने आनन्द का वेदन करता है, हर एक मुक्त जीव का स्वतंत्र अस्तित्व है।

ऐसा भी नहीं कि यह जीव किसी एक ईश्वर में मिल जाता है अर्थात् यह किसी ईश्वर का अंश भी नहीं है, यह जीव तो स्वयं ही पूर्ण ईश्वर है। मोक्ष में अनन्त आत्मायें भिन्न-भिन्न रहकर अपनी निजशक्ति से परम ईश्वर हैं; आत्मा स्वयं अपने ऐश्वर्य वाला ईश्वर है। आत्मा में अपनी ज्ञानादि अनन्त शक्तियों का पूर्णरूप से प्रगट होने का नाम ईश्वरपना है और इसीकारण ईश्वर को अनन्त शक्तिमान कहा गया है।

कोई दुर्मति ऐसा भी मानता है कि ज्ञान का अभाव हो जाने का नाम मोक्ष; परन्तु ऐसा मोक्ष का स्वरूप नहीं है। मोक्षदशा तो पूर्ण ज्ञान-आनन्द से भरपूर है। ज्ञानादि की पूर्णता होना मोक्ष है, इसके बदले में ज्ञान की शून्यता को मोक्ष मानता है ह्न यह उसकी बहुत विपरीतता है। मोक्ष होने पर यदि ज्ञान की शून्यता हो जाती हो तब तो आत्मा जड़ हो जायेगा और फिर ऐसे मोक्ष को कौन चाहेगा? ऐसा कौन होगा जो अपने ही अभाव की इच्छा करे ? मोह के अभाव के लिये रागादि परभावों से तो छूटना है; परन्तु अपने

ज्ञानादि निजगुणों से नहीं छूटना है। अज्ञानियों के संसार परिभ्रमण का अन्त नहीं है; अतः वे ज्ञानादि निजगुण से छूटने को मोक्ष मानते हैं। आप स्वयं कौन है और अपने गुण कैसे हैं ? उसकी पहचान नहीं है। **मोक्ष कह्यो निजशुद्धता** ह्न उसकी जैसे प्राप्ति हो, वही मोक्ष का पन्थ है। मोक्ष का स्वरूप समझने में ही जिसके भूल हो, उसके मोक्ष के उपाय में भी भूल होगी ही।

जीव की साततत्त्व संबंधी भूल अनादि से है; अतः कुगुरुओं के उपदेश के बिना भी अनादि से उसको मिथ्याश्रद्धा व मिथ्याज्ञान हो रहा है। उपयोगस्वरूप आत्मा मैं हूँ और मेरा स्वभाव पाँच अजीव द्रव्यों से भिन्न है ह्न ऐसे अपने भिन्नस्वरूप को समझने से अनादि की भूल मिटती है।

- जीव स्वयं उपयोगस्वरूप है ह्न उसे अज्ञानी नहीं जानता।
- देहादि अजीव अपने से भिन्न होने पर भी उसे वह अपना मानता है।
- रागादिक आस्रव दुःखदायी होने पर भी उसे वह सुखरूप मानकर सेवन करता है।
- पुण्य-पाप दोनों ही बंधनरूप होने पर भी पुण्य बंधन को वह अच्छा समझता है।
- संवर के कारणरूप ज्ञान-वैराग्य को वह कष्टरूप समझता है।
- इच्छा के निरोध से निजशक्ति के विकासरूप निर्जरा को वह नहीं जानता।
- परम निराकुल आनंदस्वरूप मोक्षदशा को भी वह नहीं पहचानता।

इसप्रकार सातों तत्त्वों के संबंध में अज्ञानी की भूल है। कई बार शास्त्रानुसार वह सात तत्त्व को जान लेता है और शास्त्र अनुसार कह भी देता है; किन्तु अन्तर में अपने सच्चे स्वरूप के वेदन बिना सातों तत्त्वों के संबंध में उसकी सूक्ष्म भूल रह जाती है। जब अन्तर में राग का अभाव करके अपने शुद्ध स्वरूप का अनुभव करे तभी तत्त्व का सच्चा श्रद्धान और ज्ञान होता है और इसके बाद चारित्र होता है ह्न ऐसे श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र से मोक्ष होता है।

अहा ! मोक्षदशा तो सर्वथा आनन्दरूप है और उसमें आकुलता का सर्वथा अभाव है; सबसे निरपेक्ष अकेला जीव अपनी शुद्धता सहित सदाकाल विराजित है, उसे न राग-द्वेष है; न शरीर है, न इच्छा है; उसे इन्द्रियों से रहित परिपूर्ण ज्ञान है और इन्द्रियविषयों से रहित परिपूर्ण आत्मसुख है। इन्द्रियों से रहित पूर्णज्ञान व पूर्णसुख कैसा होता है ? ह्न इसकी अज्ञानी कल्पना भी नहीं कर सकता; क्योंकि वह तो इंद्रियज्ञान का व इन्द्रियसुख का ही अनुभव करनेवाला है, उसे मोक्ष में होनेवाले **(शेष पृष्ठ 4 पर...)**

नियमसार प्रवचन

प्रदेश का स्वरूप एवं संख्या

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 35-36 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथायें मूलत: इसप्रकार है ह्न

संखेज्जासंखेज्जाणंतपदेसा हवंति मुत्तस्स।
धम्माधम्मस्स पुणो जीवस्स असंखदेसा हु।।३५।।
लोयायासे तावं इदरस्स अणंतयं हवे देसा।
कालस्स ण कायत्तं एयपदेसो हवे जम्हा।।३६।।

(हरिगीत)

होते अनंत असंख्य संख्य प्रदेश मूर्तिक द्रव्य के।
होते असंख्य प्रदेश धर्माधर्म चेतन द्रव्य के।।३५।।
असंख्य लोकाकाश के एवं अनन्त अलोक के।
फिर भी अकायी काल का तो मात्र एक प्रदेश है।।३६।।

मूर्त द्रव्य को संख्यात, असंख्यात और अनन्त प्रदेश होते हैं; धर्म, अधर्म तथा जीव को वास्तव में असंख्यात प्रदेश हैं।

लोकाकाश में धर्म, अधर्म तथा जीव की भाँति (असंख्यात प्रदेश) हैं; शेष अलोकाकाश के अनन्त प्रदेश हैं। काल को कायपना नहीं है, क्योंकि वह एक प्रदेशी है।

जीवादि छह द्रव्य जहाँ रहते हैं, वह लोक है। लोक के बाहर जो खाली जगह है, वह अलोकाकाश है। अलोकाकाश का अन्त नहीं है। इसे केवली प्रत्यक्ष जानते हैं। 'अंत नहीं है' अर्थात् ज्ञान में जानने में नहीं आता ह्न ऐसा नहीं है। एक आकाश अनन्त है; यदि उसे केवली नहीं जानेंगे तो वह अप्रमेय हो जाएगा, किन्तु ऐसा नहीं होता। आकाश द्रव्य में भी प्रमेयत्व नाम का गुण त्रिकाल विद्यमान है। प्रमेयत्व गुण के कारण अनन्त आकाश भी ज्ञान का ज्ञेय बनता है। प्रत्येक द्रव्य में छह सामान्य गुण हैं, उनमें प्रमेयत्व नाम का गुण है, जिसकारण द्रव्य किसी न किसी ज्ञान का विषय अवश्य बनता है।

वस्तु में जिसप्रकार अस्तित्व नाम का गुण त्रिकाल है, उसीप्रकार प्रमेयत्व गुण भी त्रिकाल है। इसी गुण के कारण पदार्थ मात्र केवलज्ञान का ही नहीं, अपितु किसी न किसी ज्ञान का विषय अवश्य बनता है। कोई नास्तिक हो तो उसे भी जगत की सत्ता स्वीकार होगी। जो खाली है, वह भी आकाश है ह्न ऐसा नास्तिक को भी स्वीकार करना पड़ेगा। 'नहीं है' ऐसा वह नहीं कह सकता। खाली रूप में दिखाई देनेवाला भी अपार अनन्त आकाश है। अपार-अनन्त आकाश को उसीरूप में ज्ञान जानता है।

आकाश द्रव्य में प्रमेयत्व नाम का गुण त्रिकाल व्यापक है; अतः वह मतिज्ञान और श्रुतज्ञान का भी विषय बनता है ह्न ऐसा निश्चय करके सर्वज्ञ कथित तत्त्वों का निर्णय करना चाहिए; अतः छह द्रव्य मति-श्रुतज्ञान में परोक्ष और केवलज्ञान में प्रत्यक्ष जानने में आते हैं ह्न ऐसा निश्चित हुआ।

इस गाथा में छह द्रव्यों के प्रदेश का लक्षण और उसके संभव का प्रकार कहा है अर्थात् छह द्रव्यों को कितने-कितने प्रदेश हैं ह्न यह कहा है।

शुद्ध पुद्गल परमाणु द्वारा अवरुद्ध हुआ आकाश स्थल ही प्रदेश है अर्थात् शुद्ध पुद्गल परमाणु आकाश के जितने भाग को रोके, उतना भाग आकाश का एक प्रदेश है। यह वस्तु को जानने का माप है, जो जगत के माप से जुदा है। शुद्ध परमाणु को भी जाना जाता है; क्योंकि उसमें भी प्रमेयत्व गुण है; अतः वह भी प्रमाण ज्ञान का विषय है।

पुद्गल द्रव्य के ऐसे संख्यात, असंख्यात और अनन्त प्रदेश होते हैं। आकाश के प्रदेश की भाँति किसी भी द्रव्य का परमाणु के व्यापने योग्य अंश उस द्रव्य का प्रदेश कहलाता है। पुद्गलद्रव्य एक प्रदेशी होने पर भी उसे पर्याय में स्कन्धपने की अपेक्षा से दो प्रदेश से अनन्तप्रदेशी भी कहा जाता है।

लोकाकाश, धर्म, अधर्म तथा एक जीव तो असंख्यात् प्रदेशी हैं, शेष बचे अलोकाकाश के अनन्त प्रदेश हैं। काल को एक प्रदेश है; अतः उसे कायत्व नहीं है, किन्तु द्रव्यत्व है।

संसार में कोई व्यक्ति घर खरीदे तो उसके चारों दिशाओं का माप निश्चित करता है, आकाश से पाताल तक का, वंश परम्परा से मालिकी को देखता है; किन्तु ये सब मूढ़ता एवं एकत्वबुद्धि है। ये सब चीजें आत्मा की नहीं हैं। अज्ञानी आत्मा का माप नहीं करता; अतः उसमें एकत्व भी नहीं करता; किन्तु परद्रव्यों में एकत्व करके

मूर्खता के कारण संसार में परिभ्रमण करता रहता है।

अब, इस गाथा की टीका पूर्ण करते हुए मुनिराज श्लोक कहते हैं।

(उपेन्द्रवज्रा)

पदार्थरत्नाभरणं मुमुक्षोः कृतं मया कंठविभूषणार्थम्।
अनेन धीमान् व्यवहारमार्गं बुद्ध्वा पुनर्बोधति शुद्धमार्गम् ।।५२।।

(हरिगीत)

मुमुक्षुओं के कण्ठ की शोभा बढाने के लिए।
षट् द्रव्यरूपी रत्नों का मैंने बनाया आभरण।।
अरे ! इससे जानकर व्यवहारपथ को विज्ञजन।
परमार्थ को भी जानते हैं जान लो हे भव्यजन।।५२।।

छह द्रव्यों रूपी रत्नों का आभूषण मैंने मुमुक्षु के कण्ठ की शोभा हेतु बनाया है, उसके द्वारा धीमानपुरुष व्यवहार मार्ग को जानकर, शुद्धमार्ग को भी जानता है।

जिसप्रकार कोई जीव गहनों की पेटी में हार, अंगूठी, चूड़ी आदि आभूषण रखते हैं; उसीप्रकार इस जगतरूपी पेटी में छह द्रव्य आभूषण हैं। वे सब स्वतंत्ररूप से कार्य कर रहे हैं, उसका यथार्थ ज्ञान करना ही मुमुक्षुओं की शोभा है। प्रत्येक द्रव्य पृथक्-पृथक् हैं, उनको पृथक्-पृथक् जानना ही शोभा है ह्न इसप्रकार बुद्धिमान पुरुष ही द्रव्य को आभूषण बनाते हैं।

आठ साल की लड़की सब्जी में नमक, मसाले, हल्दी डालती है तो वह वहाँ सभी चीजों को भिन्न-भिन्न जानती है। शक्कर या नमक की जगह हल्दी नहीं डालती। वह प्रत्येक पदार्थ और उनके गुणों को पृथक्-पृथक् जानती है, उसीप्रकार छह द्रव्यों को उनके पृथक्-पृथक् गुणों द्वारा पृथक्-पृथक् जानना चाहिए।

जिसप्रकार शक्कर और नमक दोनों के गुणों में भिन्नता है; उसीप्रकार छह द्रव्य अस्तिरूप होनेपर भी इनके विशेष गुणों में भिन्नता है। उन गुणों से उनको पृथक्-पृथक् जानना ही सम्यग्दर्शन का कारण है।

अज्ञानी छह द्रव्यों के स्वरूप को जैसा है, वैसा नहीं मानता और दया-दान-पूजा-भक्ति-व्रत-उपवास आदि शुभभावों में धर्म मानता है; किन्तु इससे धर्म नहीं होता। इसके विपरीत बुद्धिमान पुरुष छह द्रव्यों को सम्यक्प्रकार से जानकर स्वयं के स्वरूप को जानने का प्रयास करते हैं। **(शेष पृष्ठ - 4 पर...)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : आत्मानुभव करने के लिए प्रथम क्या करना चाहिए ?

उत्तर : प्रथम यह निश्चित करना कि मैं शरीरादि परद्रव्यों का कुछ नहीं कर सकता और जो विकार होता है, वह कर्म से नहीं; किन्तु मेरे अपने ही अपराध से होता है ह्न ऐसा निश्चय करने के बाद विकार मेरा स्वरूप नहीं, मैं तो शुद्ध चैतन्यमूर्ति ज्ञायक हूँ - ऐसा निर्णय करके ज्ञानानन्दस्वरूप आत्मा के सन्मुख होने का अन्तर प्रयत्न करना चाहिए।

प्रश्न : पहले व्रतादि का अभ्यास तो करना चाहिए न ?

उत्तर : सर्वप्रथम राग से भिन्न होने का अभ्यास करना चाहिए। राग से भेदज्ञान के अभ्यास बिना व्रतादि का अभ्यास करना तो सचमुच मिथ्यात्व का ही अभ्यास करना है।

प्रश्न : आत्मा प्राप्त करने के लिए सारे दिन क्या करना चाहिए ?

उत्तर : सारे दिन शास्त्र का अभ्यास करना, विचार-मनन करके तत्त्व का निर्णय करना तथा शरीरादि से एवं राग से भेदज्ञान करने का अभ्यास करना। रागादि से भिन्नता का अभ्यास करते-करते आत्मा का अनुभव होता है।

प्रश्न : अभ्यास किस प्रकार का करना चाहिए ?

उत्तर : शास्त्र वाँचना, श्रवण, सत्समागम करना चाहिए।

प्रश्न : यह सारा अभ्यास सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के लिए तो अकिंचित्कर है न?

उत्तर : यद्यपि सम्यग्दर्शन आत्मा के लक्ष्य से ही होता है, तथापि स्वाध्याय, श्रवण, सत्समागम आदि का विकल्प आता ही है, उससे परलक्षी ज्ञान निर्मल होता है। शास्त्र में अनेक स्थानों पर आता है कि आगम का अभ्यास करो। जिसे आत्मा चाहिए, उसे आत्मा के बतानेवाले देव-शास्त्र-गुरु के समागम का विकल्प आता ही है।

प्रश्न : अन्तर्दृष्टि करने का उपाय क्या है?

उत्तर : अन्तर्दृष्टि का उपाय स्वसन्मुख होकर अन्तर में दृष्टि करना है। सीधा अन्तर्मुख होकर वस्तु को पकड़े - यही उपाय है, पश्चात् ढीला करके व्यवहार से अनेक बातें कही जाती हैं। सविकल्प भेदज्ञान से निर्विकल्प भेदज्ञान होता है ह्र ऐसा कथन आता है।

प्रश्न : सविकल्प भेदज्ञान से निर्विकल्प भेदज्ञान होता है न ?

उत्तर : सविकल्प भेदज्ञान से निर्विकल्प भेदज्ञान नहीं होता; किन्तु व्यवहार से कथन में आता है।

प्रश्न : गुरुवाणी से आत्मवस्तु का स्वीकार करने पर भी अनुभव क्यों नहीं होता? अनुभव होने में क्या शेष रह जाता है ?

उत्तर : गुरुवाणी से स्वीकार करना अथवा विकल्प से स्वीकार करना वास्तविक स्वीकार करना नहीं है। अपने भाव से-अपनी आत्मा से स्वीकार करना चाहिए। श्री कुन्दकुन्दाचार्य ने कहा है कि जो हम कहते हैं, वह तुम अपने स्वानुभव से प्रमाण करना। जो अपने अन्तर से सच्चा निर्णय करेगा, उसको अनुभव होगा।

प्रश्न : आत्मा की कितनी लगन लगे कि छह मास में सम्यग्दर्शन हो जाए ?

उत्तर : ज्ञायक-ज्ञायक-ज्ञायक की लगन लगनी चाहिए। ज्ञायक की धुन लगे तो छह मास में कार्य हो जाये और उत्कृष्ट लगन लगे तो अन्तर्मुहूर्त में हो जाये।

प्रश्न : चैतन्यस्वरूप आत्मा को ही ग्रहण करने के लिए कहा; परन्तु मैं चैतन्य स्वरूप आत्मा हूँ - ऐसा लक्ष्य करने पर भेद का विकल्प तो आये बिना नहीं रहता, तो फिर विकल्प रहित आत्मा का ग्रहण कैसे करें ?

उत्तर : प्रथम भूमिका में गुण-गुणी के भेद आदि का विचार आता अवश्य है; परन्तु आत्मा के चैतन्यलक्षण से विकल्पों को भिन्न जानकर अभेद चैतन्य की तरफ ढलना होता है। भेद भले ही बीच में आवे; किन्तु मेरे चैतन्य में वह भेद नहीं है। मैं चैतन्य अवस्था का कर्त्ता, चैतन्य में से अपनी अवस्था करूँ, चैतन्य के द्वारा करूँ इत्यादि षट्कारक के भेद भले ही आवें; किन्तु यथार्थतया छहों कारकों में चैतन्यवस्तु एक ही है, उस चैतन्य में कोई भेद नहीं है। इसप्रकार चैतन्यस्वभाव की मुख्यता करके तथा भेद को गौण करके स्वरूपसन्मुख होकर भावना करने पर चैतन्य का ग्रहण होता है, वही सम्यग्दर्शन है और उसी उपाय से मोक्ष होता है।

समाचार दर्शन ह्र

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल हीरक जयन्ती वर्ष ह्र

मुम्बई में डॉ. भारिल्ल का अभिनंदन

मुम्बई : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा डॉ. भारिल्ल का हीरक जयन्ती वर्ष मनाया जा रहा है, यह जानकारी समाज को मिलते ही देश-विदेश के मुमुक्षु समुदाय में हर्ष की लहर दौड़ गयी है; सभी में अपने-अपने यहाँ इस संदर्भ में एक कार्यक्रम आयोजित करने की होड़ लग गयी है। इसी क्रम में श्वेताम्बर पर्यूषण पर्व के अवसर पर जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल्स फैडरेशन द्वारा दिनांक 19 अगस्त 2009 को भारतीय विद्या भवन के विशाल ऑडीटोरियम में डॉ. भारिल्ल का शॉल एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट कर अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल्स फैडरेशन के चेयरमेन श्री दिनेशभाई मोदी ने डॉ. भारिल्ल द्वारा अध्यात्म के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में किये गये कार्यों को अभूतपूर्व बताया। उनकी कर्तव्य-निष्ठा व लगनशीलता का उल्लेख करते हुए कहा कि डॉ. भारिल्ल ने जो भी कार्य अपने हाथ में लिया उसे कभी अधूरा नहीं छोड़ा। अध्यात्म स्टडी सर्कल के व्याख्यानमाला में वे विगत 28 वर्षों से लगतार पधार रहे हैं। उनकी यह लगन व निरन्तरता कार्य के ठोस परिणाम प्रदर्शित करती है। यही कारण है कि **कानजी स्वामी ने अपना वारसा डॉ. भारिल्ल को ही सौंपा है और किसी को नहीं।**

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट सोनगढ के संस्थापक अध्यक्ष श्री रामजीभाई दोशी के सुपुत्र श्री सुमनभाई दोशी ने कहा कि जिसप्रकार डॉ. भारिल्ल के रोम-रोम में पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी बसे हैं, उसीप्रकार मेरे रोम-रोम में डॉ. भारिल्ल बसे हैं। इसके अलावा पूज्य श्री कानजी स्वामी ट्रस्ट देवलाली के प्रमुख ट्रस्टी श्री मुकुन्दभाई खारा एवं श्री कान्तिभाई मोटाणी तथा पाटनी कम्प्यूटर्स सर्विसेज के श्री गजेन्द्रकुमार पाटनी ने भी उनकी विशेषताओं का उल्लेख करते हुए अनेक संस्मरण सुनाये।

मुम्बई दि. जैन सेवा समिति की ओर से ...

क्षमावाणी के पावन प्रसंग पर रविवार, दिनांक 6 सितम्बर, 2009 को गोरेगांव मुम्बई में एक विशाल एयरकण्डीशन हॉल में एक बृहद्सभा का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वप्रथम डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर का क्षमावाणी पर मार्मिक प्रवचन हुआ। उसके बाद पुरस्कार वितरण के साथ-साथ डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती के संदर्भ में पूरी समाज ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया।

सभा के अध्यक्ष प्रसिद्ध उद्योगपति डॉ. एस.पी. जैन ने शॉल ओढाकार, समिति के अध्यक्ष डॉ. कैलाशचन्दजी छाबड़ा ने माल्यार्पण कर एवं समिति के महामंत्री डॉ. सुभाषजी चांदीवाल ने श्रीफल भेंटकर उनका अभिनन्दन किया। सभी वक्ताओं ने डॉ. भारिल्ल की सेवाओं और उनके द्वारा देश-विदेश में किये गये धर्म प्रचार के कार्यों का उल्लेख करते हुये अपनी-अपनी भावनायें व्यक्त की।

कोटा संभाग द्वारा बुन्देलखंड की तीर्थयात्रा संपन्न

कोटा : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, कोटा संभाग द्वारा दिनांक 7 अगस्त से 16 अगस्त 2009 तक बुन्देलखण्ड के तीर्थक्षेत्रों की वंदना का आयोजन किया गया। तीर्थयात्रा के संघपति श्रीमती सुनीता धर्मपत्नी श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा परिवार एवं उद्घाटनकर्ता श्रीमान प्रकाशचन्दजी खटोड़ कोटा व श्री प्रेमचन्दजी जैन जमीतपुरा परिवार थे। श्री प्रेमचन्दजी सोगानी परिवार बारां, श्री अशोकजी गंगवाल परिवार बारां एवं श्री विकासजी गंगवाल परिवार बारां की ओर से तीर्थयात्रा किट वितरित किये गये।

यात्रा में मुम्बई, जयपुर, चित्तौड़, बूंदी, रन्नौद, शिवपुरी इत्यादि अनेक स्थानों से 200 साधर्मीजन सम्मिलित हुए। यात्रा में पण्डित सुरेशजी पिपरा टीकमगढ, पण्डित जयकुमारजी बारां, पण्डित प्रियंकजी शास्त्री रहली, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री अभाना, पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर, पण्डित विनयजी शास्त्री बूंदी, पण्डित अमितजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित आशीषजी शास्त्री कोटा एवं ब्र. ममता दीदी आदि विद्वानों का लाभ मिला।

सम्पूर्ण यात्रा श्री विनोदकुमारजी सेठिया कोटा के दिशानिर्देश व पण्डित जयकुमारजी बारां के कुशल निर्देशन एवं पण्डित निकलंकजी शास्त्री कोटा के संयोजकत्व में आयोजित की गयी।

यात्रा को सफल बनाने में श्री विक्रान्त जैन, चेतन जैन, सुनील जैन देवरी, विनोद जैन फतेहगढी, प्रशान्त जैन, अखिलेश जैन, मुकेश जैन, अनेकान्त जैन की सक्रिय भूमिका रही।

युवा फैडरेशन का प्रांतीय अधिवेशन सम्पन्न

भोपाल : श्री महावीर दि. जैन मंदिर टी.टी नगर के सभागार में अ. भा. जैन युवा फैडरेशन का मध्यप्रदेश प्रान्त का प्रान्तीय अधिवेशन श्री विजयजी बडजात्या इन्दौर की अध्यक्षता में विभिन्न शहरों से पधारे प्रान्तीय पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों तथा विद्वत्जनों की उपस्थिति में विभिन्न कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ।

स्वागत गीत एवं अतिथियों के स्वागत के बाद प्रथम सत्र प्रारंभ हुआ। फैडरेशन के प्रचार मंत्री श्री जितेन्द्र सौगाणी ने फैडरेशन के उद्देश्यों एवं गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

फैडरेशन को गतिशील बनाये रखने के संबंध में अनेक विद्वानों ने अपने-अपने सुझाव एवं प्रस्तावों से अवगत कराया।

विचार एवं प्रस्तावों को ध्यान में रखकर आगामी बैठक की तिथि निश्चित की गई। अधिवेशन का उद्घाटन कोहेफिजा जैन समाज के अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी चौधरी एवं मण्डल के अध्यक्ष श्री अशोक जैन-सुभाष ट्रांसपोर्ट ने किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री जितेन्द्रजी सौगाणी ने किया।

शोक समाचार

1. **छिन्दवाड़ा निवासी** श्रीमती पुष्पलता जैन जीजीबाई ध.प. श्री अजितकुमारजी जैन के ज्येष्ठ पुत्र **इंजीनियर श्री शैलेन्द्र जैन** का असाध्य रोग के चलते मात्र 50 वर्ष की आयु में 22 जुलाई को शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप युवा फैडरेशन छिन्दवाडा के मार्गदर्शक एवं स्वाध्याय प्रेमी थे। आपकी स्मृति में परिवार द्वारा 500/- रुपये प्राप्त हुये, एतदर्थ धन्यवाद !

2. **देवलाली निवासी ब्र. श्रीचन्दजी** का दिनांक 16 सितम्बर को लगभग 75 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपने 20 वर्ष की उम्र में गुरुदेवश्री के सान्निध्य में ब्रह्मचर्यव्रत ले लिया था। आप सदैव स्मारक की गतिविधियों की हृदय से प्रशंसा किया करते थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही हमारी मंगल भावना है।

फैडरेशन शाखा का पुनर्गठन

नागपुर (महा.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया। चयन समिति का अधिभार श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री जयकुमारजी देवडिया, श्री सुदीपजी जैन एवं महाराष्ट्र प्रान्तीय अध्यक्ष श्री नरेशजी सिंघई ने सम्हाला। कार्यकारिणी का गठन इसप्रकार किया गया ह्न

अध्यक्ष : श्री विपिन जैन शास्त्री, **उपाध्यक्ष :** श्री प्रियदर्शन जैन, **मंत्री:** श्री निखिल सुखानन्द मोदी, **उपमंत्री :** श्री संजय मारवडकर, **प्रचार मंत्री :** श्री मनीष शास्त्री सिद्धान्त व श्री अखिलेश जैन सागर, **कोषाध्यक्ष :** श्री सौरभ सुदीप जैन। **संरक्षक :** श्री दिलीपजी नखाते, डॉ. सुरेशजी सिंघई एवं श्री संदीप जैनी को बनाया गया। इस अवसर पर श्री महावीर विद्या निकेतन के प्राचार्य श्री अशोकजी शास्त्री एवं फैडरेशन के पूर्व अध्यक्ष श्री संदीपजी जैनी ने संयुक्त रूप से सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की साक्षी पूर्वक सभी कार्यकारिणी सदस्यों को पूर्ण निष्ठा से कार्य करने के लिये शपथ दिलाई।

भारत जैन महामण्डल की बैठक में ह्न

परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल का व्याख्यान

मुम्बई (दक्षिण) : यहाँ भारत जैन महामण्डल दक्षिण मुम्बई की नियमित मासिक बैठक दिनांक 28 अगस्त, 2009 को सम्राट रेस्टोरेंट में सम्पन्न हुई। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती हेमलताजी द्वारा किया गया। सभा में उपस्थित मुख्यवक्ता श्रीमान् परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने **दुःख दूर कैसे हो ?** इस विषय पर सुन्दर विवेचन प्रस्तुत किया।

इस प्रसंग पर श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल का सम्मान अध्यक्ष श्री पारसमलजी सोलंकी एवं श्रीमती विद्या उत्तम शाह द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री विमलचन्दजी कोठारी, श्री सुरेशजी भण्डारी, श्री एस. के. जैन, श्री शांतिलालजी पूनमिया आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत द्वारा किया गया।

दसलक्षण महापर्व सानन्द सम्पन्न

मुम्बई (मुमुक्षु) : यहाँ श्री सीमंधर जिनालय के तत्त्वावधान में दशलक्षण पर्व के अवसर पर दिनांक 24अगस्त से 3 सितम्बर, 2009 तक प्रात:काल गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् भारतीय विद्या भवन के विशाल हॉल में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचंद भारिल्ल जयपुर के प्रवचनसार के सार पर मनोज्ञ शैली में मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके प्रवचन के पूर्व पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री के नयचक्र पर प्रवचन होते थे। सायंकाल श्री सीमन्धर जिनालय में पण्डित नीलेशभाई द्वारा दशधर्म व समयसार आदि विभिन्न ग्रन्थों पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन प्रात: पूजन-विधान एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति होती थी।

जयपुर (आदर्शनगर) : यहाँ पर्व पर श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रतिदिन प्रात: दशधर्म पर आधारित व्याख्यानों का लाभ साधर्मी भाई-बहनों ने लिया। रात्रि में कु.परिणति पाटील द्वारा धर्म की आवश्यकता व उसके आधार से देव-शास्त्र-गुरु के स्वरूप पर प्रवचन हुए।

जयपुर (तेरहपंथी बड़ा मंदिर) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर के प्रतिदिन ग्रन्थाधिराज समयसार के आधार से ओजस्वी शैली में मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपने सुखी जीवन के अनेक सूत्र बताते हुये आत्मकल्याण की राह बताई।

उदयपुर (राज.) : यहाँ सेक्टर-3 स्थित दि. जैन मंदिर में दशलक्षण पर्व के अवसर पर ब्र.यशपालजी द्वारा प्रात: प्रक्षाल पूजन के पश्चात् गुणस्थान विवेचन की कक्षा ली गई। सायंकाल पण्डित संयमजी शास्त्री द्वारा बालकक्षा एवं ब्र.यशपालजी द्वारा बारह भावना पर प्रवचन हुए। सम्पूर्ण कार्यक्रम एवं व्यवस्था अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के सहयोग से सम्पन्न हुई।

जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन) : दशलक्षण पर्व के शुभ अवसर पर ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रतिदिन प्रात: नित्यनियम एवं दशलक्षण पूजन के पश्चात् आध्यात्मिकसत्पुरूष गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन होते थे, तत्पश्चात् डॉ. श्रेयांसजी सिंघई द्वारा समयसार के अस्रवाधिकार पर प्रवचन हुए। दोपहर में पण्डित संतोषजी शास्त्री की मोक्षमार्गप्रकाशक पर कक्षा चली। सायंकाल भक्ति व छात्र प्रवचन के पश्चात् मुख्य प्रवचन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा प्रवचनसार पर हुए। सांस्कृतिक कार्यक्रम छात्रों ने सम्पन्न कराये। ज्ञातव्य है कि यहाँ सुगंध दशमी के दिन अ.भा. जैन युवा फैडरेशन महानगर जयपुर शाखा द्वारा सायंकाल जैसी करनी वैसी भरनी (चार ध्यान)पर आधारित एक सजीव झांकी का प्रदर्शन किया गया, जिसे देखकर जयपुर शहर के हजारों लोगों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

सागर(म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर जिनालय परकोटा में महापर्व के अवसर पर पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन के प्रात: समयसार गाथा-320, दोपहर में तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। इसी दौरान पण्डित दीपकजी शास्त्री जयपुर एवं स्थानीय पण्डित शशांकजी शास्त्री द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान, सायंकाल बालकक्षा एवं

रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सुन्दर आयोजन किया गया।

मुम्बई (मलाड) : श्री दि. जैन उत्कर्ष मुमुक्षु मण्डल एवं श्री कुंदकुंदकहान स्वाध्याय मण्डल में दशलक्षण पर्व के अवसर पर पण्डित श्री राजकुमारजी शास्त्री द्वारा प्रात: प्रवचनसार एवं सायं इष्टोपदेश ग्रंथ के माध्यम से सारगर्भित प्रवचन हुए। प्रात: पण्डित प्रीतम शास्त्री द्वारा पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री के सहयोग से दशलक्षण विधान कराया गया। पर्व के मध्य ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री के आगमन पर समाज ने उनके दो प्रवचनों का लाभ लिया। सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित अश्विनभाई के निर्देशन में श्री वीनूभाई व श्री प्रवीणभाई शाह के सहयोग से सम्पन्न हुए।

राजकोट (गुज.) : यहाँ श्री दि. जैन मंदिर में जयपुर से पधारे पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के सान्निध्य में प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् गुरुदेवश्री का योगसार पर मांगलिक सी.डी. प्रवचन होता था। तदुपरान्त पण्डितजी के समयसार ग्रन्थाधिराज पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर की कक्षा विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। सायंकाल दशलक्षण धर्मों पर आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में पाठशाला के बच्चों एवं दिग. जैन सोश्यल ग्रुप द्वारा ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। **ह्न चेतन भाई**

कोटा (राज.) : यहाँ दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं जैन युवा फैडरेशन रामपुरा कोटा के तत्त्वावधान में श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन में दशलक्षण पर्व के अवसर पर पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री कानपुर के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके द्वारा प्रतिदिन प्रात: समयसार के कर्त्ता-कर्म अधिकार, दोपहर में परीक्षामुख एवं सायंकाल दशधर्मों पर रोचक शैली में प्रवचन हुये। **इन्द्र विहार स्थित श्री सीमंधर जिनालय** में डॉ. मानमलजी जैन कोटा के प्रतिदिन प्रात: समयसार, छहढाला एवं मोक्षमार्गप्रकाशक तथा सायंकाल दशधर्मो पर प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। क्षमावाणी के अवसर पर पण्डित कमलेशकुमारजी शास्त्री मौ का बहुत ही मार्मिक एवं प्रेरणादायी प्रवचन हुआ।

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीरस्वामी दि. जैन मंदिर बड़ा फुहारा में पर्व के अवसर पर पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर पधारे। आपके द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं रात्रि में दशलक्षण धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रात: पूजन में नवयुवकों ने उत्साह से भाग लिया। आपकी प्रेरणा से गुरुदेवश्री का दैनिक सी.डी. प्रवचन प्रारंभ हुआ। युवा फैडरेशन के अनेक नये सदस्य बने तथा महिलाओं के लिये ज्ञान चेतना मण्डल का गठन हुआ।

मुम्बई-अन्धेरी (ई.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर ने प्रतिदिन प्रात: पूजन के पश्चात् तत्त्वार्थ-सूत्र की कक्षा ली। साथ ही सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त आपके दशधर्मों पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में विविध कार्यक्रम कराये गये।

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के अंतर्गत श्री सीमंधर जिनालय में पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर के प्रात: समयसार ग्रन्थाधिराज एवं सायंकाल दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण विधान का आयोजन पण्डित अश्विनजी शास्त्री के सहयोग से श्री मनोजजी कासलीवाल, मेघा लुहाड़िया, नरेशजी, विनयजी लुहाड़िया, सुमनजी बड़जात्या, अनिता कासलीवाल एवं प्रकाशजी पाण्ड्या द्वारा कराया गया। दोपहर में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल बालकक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। सभी कार्यक्रम श्री पूनमचन्दजी लुहाडिया के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ गोलगंज स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री जयपुर के प्रतिदिन प्रात: समयसार पर प्रवचन के उपरान्त गुणस्थान विवेचन पर कक्षा, दोपहर में पंच परावर्तन पर कक्षा तथा सायंकाल बारह भावना एवं दशलक्षण धर्मों पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: पूजन-विधान, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति तथा रात्रि में छिन्दवाड़ा फैडरेशन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **ह्र दीपकराज जैन**

गुना (म.प्र.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर में जयपुर से पधारे पण्डित संजयजी सेठी के प्रतिदिन प्रात: समयसार के सर्व विशुद्ध ज्ञान अधिकार पर प्रवचन, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र अध्याय-6 पर कक्षा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्मों पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपका एक प्रवचन छोटे मंदिर में भी हुआ। प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण विधान एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति होती थी। दोपहर में दो दिन 64 ऋद्धि एवं शांतिविधान कराया गया। रात्रि में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन एवं महिला फैडरेशन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। अनेक नये युवा साथियों ने फैडरेशन की सदस्यता ग्रहण की। **ह्र बाबूलाल बांझल**

अहमदाबाद (ईशनपुर) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री द्वारा प्रतिदिन प्रात: समयसार के आधार से मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल भक्ति, बालकक्षा एवं भक्तामर की प्रौढकक्षा के बाद दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बांसवाड़ा के प्रतिदिन प्रात: समयसार के आधार पर आत्मा की खोज विषय पर प्रवचन, दोपहर में भक्तामर स्तोत्र पर कक्षा, सायंकाल दशलक्षण धर्मों के साथ-साथ जैनत्व की पहिचान विषय पर व्याख्यान हुये। जिनेन्द्र महिला मण्डल द्वारा विशेष कार्यक्रम आयोजित कराये गये।

झांसी (उ.प्र.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के राजस्थान प्रदेश प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसूत्र एवं पूजन क्या-क्यों-कैसे ? विषय पर प्रवचन हुये। दोपहर में छहढाला पर कक्षा एवं सायंकाल विदुषी सीमाजी जैन द्वारा बालकक्षा का आयोजन किया गया। रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों विविध नाटकों की प्रस्तुति दी गई।

बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ खान्दू कॉलोनी स्थित चैत्यालय में दशलक्षण पर्व के अवसर पर दशलक्षण विधान व श्री महीपालजी ज्ञायक के प्रवचनों का लाभ स्थानीय समाज ने प्राप्त किया। इस अवसर पर रत्नत्रय तीर्थ ध्रुवधाम में दशलक्षण विधान एवं गुरुदेवश्री के सी.डी.

प्रवचन के पश्चात् पण्डित बांके बिहारीजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला। सांस्कृतिक कार्यक्रम डॉ. ममताजी जैन के निर्देशन में ध्रुवधाम विद्यालय के छात्रों द्वारा सम्पन्न कराये गये।

नागपुर (महा.) : यहाँ ब्र. सुनीलकुमारजी शास्त्री शिवपुरी के समयसार के आधार से 47 शक्तियों पर प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर श्री सिद्धचक्र विधान पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ ने सम्पन्न कराया। पर्व के मध्य स्थानीय विद्वान विपिनजी शास्त्री, पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी शास्त्री, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित रविन्द्रजी शास्त्री, पण्डित पंकजजी शास्त्री, पण्डित धवलजी शास्त्री आदि का सानिध्य मिला। सांस्कृतिक कार्यक्रम महिला फैडरेशन के तत्त्वावधान में महावीर विद्या निकेतन के छात्रों द्वारा संपन्न हुये। यहाँ पर्व के मध्य हिंसक सौन्दर्य प्रसाधन एवं हिंसा के विरुद्ध अहिंसा जनजागृति अभियान भी चलाया गया।

28वाँ जैन अध्यात्म महोत्सव सम्पन्न

मुम्बई : जैन अध्यात्म स्टडी सर्कल्स फैडरेशन, मुम्बई द्वारा दि. 16 अगस्त से 23 अगस्त 09 तक आयोजित 28वाँ जैन अध्यात्म महोत्सव (पर्यूषण व्याख्यानमाला) के अंतर्गत मुम्बई के विभिन्न सर्कल्स चौपाटी, ताडदेव, दादर, वालकेश्वर, घाटकोपर, मांडवी आदि में आध्यात्मिक प्रवक्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, पण्डित फूलचन्दजी शास्त्री, पण्डित आदित्य शास्त्री, पण्डित किशोर शास्त्री, पण्डित आदेश शास्त्री एवं पण्डित सुधीर शास्त्री के विभिन्न विषयों पर हुए व्याख्यानों का लाभ मिला।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

4 अक्टूबर	जयपुर	हीरक जयन्ती समारोह
15 से 19 अक्टूबर	देवलाली	दीपावली
20 व 21 अक्टूबर	कोल्हापुर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
22 व 23 अक्टूबर	बेलगाँव	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
24 अक्टूबर	गोवा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
28 अक्टूबर	मंगलायतन-वि.विद्यालय	दीक्षान्त समारोह
13 से 17 नवम्बर	गजपंथा	पंचकल्याणक
18 व 19 नवम्बर	बीना	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
20 व 21 नवम्बर	विदिशा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
22 से 24 नवम्बर	होशंगाबाद	तारण जयन्ती एवं हीरक जयन्ती
25 से 27 नवम्बर	देवलाली	वेदी प्रतिष्ठा
28 नवम्बर	मुम्बई	प्रवचन
29 नवम्बर	इन्दौर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
21 से 27 दिसम्बर	दक्षिण भारत	फैडरेशन यात्रा

आगामी कार्यक्रम....

डॉ. भारिल्ल का विशेष व्याख्यान

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल द्वारा **श्रीमंत सेठ लक्ष्मीचंदजी की स्मृति** में आयोजित व्याख्यानमाला का आयोजन दिनांक 21 नवम्बर,09 को 'जैन कॉलेज विदिशा परिसर' में होगा। इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता भोपाल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रवीन्द्र जैन करेंगे। सभा में मुख्यवक्ता के रूप में **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** जयपुर का **अनेकान्त और स्याद्वाद** के संदर्भ में विशेष व्याख्यान का लाभ मिलेगा।

इस अवसर पर न्यास के उपाध्यक्ष एवं म.प्र. के वित्तमंत्री श्री रावजीभाई की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है एवं मुख्यमंत्रीजी को भी बुलाने का प्रयास चल रहा है। **ह्न राजेन्द्र जैन**

डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती के संदर्भ में ह्न

भोपाल से कविवर पण्डित राजमलजी पवैया लिखते हैं कि ह्न

''यह जानकर हर्ष हुआ कि आपका हीरक जयन्ती महोत्सव मनाया जा रहा है। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। गुरुदेवश्री के पश्चात् मुमुक्षु समाज में आपका महत्त्वपूर्ण स्थान है। अनेक ग्रन्थ लिखकर आपने मुमुक्षु समाज पर उपकार किया है। अक्षय काल तक आप तत्त्वसेवा में रत रहें ह्न यही शुभ कामना है। दीर्घायु होते हुये स्वस्थ व प्रसन्न रहें। इस शुभ अवसर पर इच्छा होते हुये भी स्वास्थ्य की प्रतिकूलता से मेरा आना संभव नहीं है। चलते-फिरते भी नहीं बनता है, मंदिर भी गाडी से जाना पडता है। अत: मेरी अनुपस्थिति के लिये क्षमा करें। पुन: हार्दिक बधाईयाँ !''

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का ह्न

हीरक जयन्ती समारोह

(रविवार, दिनांक 4 अक्टूबर 2009, सायं 7.30 बजे से)

मुख्यअतिथि : माननीय श्री अशोकजी गहलोत (मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार)

विशिष्ट अतिथि : माननीय श्री प्रदीपकुमारजी जैन (केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री)

अध्यक्षता : श्री एन. के. सेठी (अध्यक्ष, तीर्थक्षेत्र कमेठी श्री महावीरजी)

निवेदक

सकल दिगम्बर जैन समाज जयपुर

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर